P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-11*(Part-2) February 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

बुन्देलखण्ड के वनांचल में अधिवासित आदिवासियों का शैक्षणिक परिदृश्य

स्वामी प्रसाद
विभागाध्यक्ष,
समाजशास्त्र विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
हमीरपुर (उ0प्र0) भारत

शक्ति गुप्ता
असिस्टेंट प्रोफेसर,
राजनीति विज्ञान विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
हमीरपुर (उ0प्र0) भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र उत्तर प्रदेश राज्य के दक्षिणी भाग में स्थित बुन्देलखण्ड भू–भाग के नवसृजित जनपद चित्रकूट के ''पाठा'' क्षेत्र से सम्बन्धित है। जनपद चित्रकूट का दक्षिण–पूर्वी भाग पठारी है , जिसे 'पाठा' के नाम से जाना जाता है। इस वनांचल के मूल निवासी आदिवासी कोल हैं।[1]

मुख्य शब्द : भू–भाग, दक्षिण–पूर्वी

प्रस्तावना

नव सृजित जनपद चित्रकूट जिसमें पाठा क्षेत्र अवस्थित है , का क्षेत्रफल 2918.27 वर्ग किलोमीटर है।[2] उत्तर प्रदेश की औसत जनसंख्या का घनत्व (2011 के अनुसार) 690 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। तुलनात्मक दृष्टि से जनपद चित्रकूट का जनसंख्या घनत्व (2011 के अनुसार) 242 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है।[3] इस प्रकार जनसंख्या घनत्व राज्य की तुलना में काफी कम है। यहाँ औसतन प्रति व्यक्ति 1.10 एकड़ भूमि उपलब्ध है , जबकि प्रदेश का औसतन 0.59 एकड़ है। भूमि के असमान वितरण के कारण यहाँ के सबसे निर्धन लोग दलित आदिवासी कोल हैं।[4] विड़म्बना यह है कि विपुल भूमि खण्ड में रहने वाले इस इलाके के मूल निवासी कोलों के पास बिल्कुल भी जमीन नहीं है। यदि है भी तो बहुत कम है। वनाच्छादित एवं पठारी क्षेत्र होने के कारण यहाँ की अधिकांष भूमि वन विभाग एवं खनन विभाग के आधिपत्य में है। फलस्वरूप यहाँ के मूल निवासी या आदिवासी कोलों की जनसंख्या का एक बड़ा भाग भूमिहीन है। भूमिहीन या छोटी खेती वाले कोलों को मजदूरी से या वनोत्पादन की बिक्री से प्राप्त धन से जीवन यापन करना पड़ता है। वन क्षेत्र से वनोत्पादन बटोरने वाले कोलों को वनों में एक स्थान से दूसरे स्थान पर भटकना पड़ता है। अनेक कोल इस क्षेत्र के बड़े किसानों या भूमिपतियों के यहाँ कृषि मजदूरों अथवा बंधुआ मजदूरों के रूप में काम करते हैं। इन दोनों ही प्रकार के मजदूरों (कोलों) की दैनिक मजदूरी अन्य मजदूरों की तुलना में बहुत कम है। स्वतंत्र रूप से मजदूरी करने वाले कोलों की संख्या प्रायः कम है। अधिसंख्य कोल (स्त्री, पुरूष) खनन एवं वन विभाग के ठेकेदारों के अधीन कार्य करते हैं।

जिन क्षेत्रों में कोल अपेक्षाकृत अधिक संख्या में रहते हैं , उन्ही भाग को अध्ययन हेतु चुना गया है। वनांचल पाठा के आदिवासी कोलों के शैक्षणिक परिदृष्य कैसा है। इसी उदेष्य से अध्ययन हेतु दो प्रकार के कोल ग्रामों को चुना गया – कस्बा अथवा नगर के कोल ग्राम , तथा जंगल में आबाद कोल ग्राम। पाठा क्षेत्र के दक्षिण जंगल में आबाद ''इटवा–डुडैला'' तथा ''टिकरिया'' ग्राम , कस्बा अर्थात नगर के रूप में विकसित ''मानिकपुर'' एवं ''बरगढ़'' बाजार के समीप रहने वाले कोल।

अध्ययन क्षेत्र की जनसंख्या 2011

N.	Name ofArea	Total Population	Population		Population of Sc			Lit tot p.
			Male	Female	Total Population SC	Male (SC)	Female (Sc)	
1	इटवा डुडैला	4967	2638	2329	1388	723	665	2398
2	टिकरिया	1630	866	764	1018	537	481	713
3	मानिकपुर	274	136	138	157	73	84	585
4	बरगढ बाजार	4952	2634	2318	1229	679	550	2953

मध्य भारत की प्रायः सभी जनजातियों प्रोटो–आस्ट्रेल्वायड प्रजाति लक्षणों को प्रस्तुत करती है। इनका एक प्रतिनिधि समूह कोलारियन प्रकार कहा गया है। कोलारियन के अन्तर्गत मुण्डा, हो, सन्थाल, जुआँग आदि आते हैं। कोल इसी प्रजाति समूह का प्रतिनिधित्व करती है।

'कोल' कोलेरियन परिवार की जनजाति है।[5] यह मुण्डा, हो, सन्थाल, भूमिज, तमरिया, जुआंग परिवार की जनजातियों से जुड़ी है। कोल जनजाति के लोग मध्य प्रदेश, उड़ीसा, महाराष्ट्र और उत्तर प्रदेश में फैले हुए हैं। मानवषास्त्रियों के अनुसार उत्तर प्रदेश की जनजातीय जनसंख्या के प्रतिशत का 25.00 प्रतिशत जनसंख्या कोल जनजाति की है, जो अन्य जनजातियों की तुलना में अधिक है। उत्तर प्रदेश में इस जनजाति के लोग वाराणसी, मिर्जापुर, इलाहाबाद , बाँदा एवं चित्रकूट जनपदों में पाये जाते हैं।[6] कोलों को सभी राज्यों में अनुसूचित जनजाति माना गया है, केवल उत्तर प्रदेश ही ऐसा राज्य है, जहाँ इन्हें अनुसूचित जाति के अन्तर्गत रखा गया है।[7] कोलों का सबसे अधिक केन्द्रीयकरण मध्य प्रदेश – उत्तर प्रदेश राज्यों में हुआ है। मध्य प्रदेश में जबलपुर व कटनी जनपदों में सर्वाधिक 'कोल' पाये जाते हैं। इसके अतिरिक्त उत्तर प्रदेश की सीमा से लगे पन्ना एवं सतना जनपदों में भी कोल पाये जाते हैं।

कोल शब्द की व्युत्पत्ति

''कोल'' शब्द की व्युत्पत्ति के बारे में विद्वानों में मतैक्य नहीं है। संभवतः छोटा नागपुर के खरियों द्वारा मुण्डा लोगों को 'कोरार' नाम दिया गया था। 'कोरार' कोल शब्द के अत्यन्त निकट है। संस्कृत में कोल शब्द का अर्थ 'रवस्सी सुअर' भी होता है।[8] कुछ लोगों का मत है कि यह शब्द सामान्यतः तिरस्कार सूचक है, जिसे संभवतः आर्यो द्वारा द्रविणों के लिए प्रयुक्त किया गया होगा। कुछ विद्वानों के अनुसार 'कोल' शब्द का अर्थ है 'सुअर मारने वाले'। अन्य लोगों के अनुसार कोल शब्द मुण्डारी भाषा से उत्पन्न हुआ है।[9] 'हो', होरो जिसका तात्पर्य होता है 'आदमी' जोकि कुछ समय बाद 'कोरों' या 'कोल' के रूप में परिवर्तित हो गया।[10] बिहार की मुण्डा जनजाति से भिन्न उत्तर प्रदेश या मध्य प्रदेश के कोल बिना किसी हिचकिचाहट के स्वयं को कोल कहते हैं। इनकी औरते ''कोलिन'' कही जाती हैं, और इनके जिस स्थान पर अनेक घर होते हैं उस स्थान को 'कोलान' की संज्ञा दी जाती है।

आदिवासी कोलों का शैक्षणिक परिदृष्य

पाठा क्षेत्र में शिक्षा की स्थिति अत्यन्त दयनीय है। वास्तव में बुन्देलखण्ड क्षेत्र आर्थिक विकास में प्रदेश के अन्य भागों की तुलना में तो पिछड़ा है ही, साथ में शिक्षा के क्षेत्र में भी बहुत पिछड़ा है। 1991 में प्राप्त आँकड़ों के अनुसार नवसृजित जनपद चित्रकूट में 103343 पुरूष तथा 19489 महिलाएं साक्षर थी। जनपद में पुरूषों की साक्षरता का प्रतिशत 55.6 तथा महिलाओं का 25.3 प्रतिशत है।[11] वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार चित्रकूट जनपद का साक्षरता दर 66.6 है जिनमें पुरूषों की साक्षरता दर 78.75 तथा महिलाओं की साक्षरता दर 51.28 प्रतिशत है।[12] इस प्रकार प्रदेश की तुलना में जनपद का साक्षरता प्रतिशत निम्न है। पाठा क्षेत्र में दूर–दूर बसे गांवों में प्राथमिक पाठषालाओं का अभाव है। जो हैं भी, उनके भवन और उपकरण दयनीय दषा में हैं। एक ही षिक्षक पूरे विद्यालय का संचालन करता है। इसलिए अपने बच्चों को शिक्षा दिलाने के लिए तत्पर सवर्ण या सम्पन्न लोग नगरों एवं कस्बों जैसे मानिकपुर, अतर्रा, चित्रकूट (कर्वी) एवं बाँदा भेजने के लिए विवष होते हैं। विद्यालयों का अभाव, विद्यमान विद्यालयों की दषा, अध्यापकों की अपेक्षा पूर्ण कार्य शैली तथा शासन की अरूचि के साथ–साथ शिक्षा के महत्व की चेतना की कमी आदि अनेक कारणों से पाठा क्षेत्र में शिक्षा की गति धीमी एवं असन्तोषजनक है। फिर भी कुछ वर्ष पूर्व कोलों के बच्चों के लिए आश्रम पद्धति के विद्यालय की स्थापना मानिकपुर में की गयी है। कुछ ग्रामों में स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा प्राथमिक विद्यालयों को संचालित किया जा रहा है। अब धीरे–धीरे कोल बच्चे विद्यालयों में प्रवेष लेने लगे हैं।

तालिका – कोल आदिवासियों का शैक्षणिक विवरण

क्र	चयनित ग्राम	कुल उत्तरदात्री	शिक्षा सम्बन्धी विवरण											
			अशिक्षित		क		ख		ग		घ		च	
			सं0	%	सं0	%	सं0	%	सं0	%	सं0	%	सं0	%
1	इटवा डुडैला	100	89	89.0	07	7.0	04	4.0	00	0.0	00	0.0	00	0.0
2	टिकरिया	100	82	82.0	10	10.0	08	8.0	00	0.0	00	0.0	00	0.0
3	मानिकपुर	100	50	50.0	13	13.0	17	17.0	20	20.0	00	0.0	00	0.0
4	बरगढबाजार	100	71	71.0	14	14.0	10	10.0	05	5.0	00	0.0	00	0.0
	योग –	400	292	73.0	44	11.0	39	9.75	25	6.25	00	0.0	00	0.0

स्रोत :– क्षेत्रीय सर्वेक्षण के आधार पर

क – साक्षर / प्राथमिक
ख – पूर्व माध्यमिक
ग – हाईस्कूल
घ – इण्टरमीडिएट
च – स्नातक तथा अन्य

आदिवासी कोलों की शैक्षणिक स्थिति का विष्लेषण तालिका में किया गया है। अध्ययन क्षेत्र की 73. 0 प्रतिशत कोलं अशिक्षित है। 11.0 प्रतिशत पूर्व माध्यमिक तथा 6.25 प्रतिशत कोल हाईस्कूल तक की शिक्षा प्राप्त है। इण्टरमीडिएट तथा इससे उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त करने वाले कोलों का प्रतिशतांक शून्य है। हाईस्कूल स्तर तक की शिक्षा प्राप्त करने वाले कोल मानिकपुर (20.0) एवं बरगढ़ बाजार (5.0) के है। मानिकपुर एवं बरगढ़ बाजार नगरीय क्षेत्र हैं, जबकि इटवा डुडैला तथा टिकरिया जंगल में आबाद कोल बाहुल्य ग्राम हैं। तालिका के विष्लेषण से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्राधारित संरचना का प्रभाव शैक्षणिक स्थिति पर पड़ता है। नगरीय क्षेत्र में अधिवासित कोलों में शैक्षणिक जागरूकता ग्रामीण क्षेत्र से अधिक है।

कोलो के शैक्षणिक पिछडेंपन में आख्थक कारकों का प्रभाव तो पडता है साथ ही शैक्षणिक संस्थानों का अभाव एवं षासकीय इच्छाषक्ति की कमी भी कोलों के शैक्षणिक।

सन्दर्भ ग्रथ सूची

1. *सांख्यिकी पत्रिका (2015) जनपद , पृ.सं. 10।*
2. *उत्तर प्रदेश वार्षिकी (2016) , (सम्पादित) लखनऊ , सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग उ.प्र.। पृ. सं. 2*
3. *भारत की जनगणना 2011 .नई दिल्ली।*
4. *सांख्यिकी पत्रिका 2015 , जनपद चित्रकूट पृ. सं. 27।*
5. *हसन अमीर .पाठा के कोत .इलाहाबाद. पृ. सं. 32।*
6. *शांडियाल डा0 महेश चन्द्र. कोल .भोपाल . पृ. सं. 05।*
7. *अनुसूचित जातियों की सूची सूचना विभाग लखनऊ।*
8. *हसन अमीर .पाठा के कोत .इलाहाबाद. पृ. सं. 55।*
9. *क्रुक्स डब्ल्यू – द ट्राइब एण्ड कास्ट्स ऑफ नार्थ वेस्टर्न प्राविन्सेज एण्ड अवध, वाल्यूम।।।, दिल्ली कास्मों पब्लिकशन्स, पृ.सं. 294–315।*
10. *शांडियाल डा0 महेश चन्द्र .कोल .भोपाल . पृ. सं. 21।*
11. *भारत की जनगणना 1991.नई दिल्ली।*
12. *भारत की जनगणना 2011.नई दिल्ली।*